आकलन और रिर्पोटिंग का एक नजरिया

कमला वी. मुकुंदा

मैं एक छोटे स्कूल में पढ़ाती हूं। इसमें 70 शिक्षार्थी और लगभग 15 पूर्णकालिक शिक्षक-शिक्षिकाएं हैं। शिक्षक स्कूल चलाते हैं और पाठ्यचर्या के विकास के लिए साझे प्रयास करते हैं। हमने एक अहम् फैसला यह लिया है कि 10वीं या 12वीं कक्षा से पहले, जब तक बच्चों को मान्यता प्राप्त प्रमाण पत्र की जरूरत न हो, हम किसी तरह का इम्तहान नहीं लेंगे। कोई क्लास टेस्ट नहीं, किसी तरह की अचरज भरी प्रश्नोत्तरी (सरप्राइज-क्विज) नहीं, कोई फाइनल (अंतिम) परीक्षा नहीं, कुछ भी ऐसा नहीं। इसका आखिर मतलब क्या है? हमारे शिक्षार्थी कक्षा-कार्य और गृहकार्य करते हैं, जिसे जांचा जाता है और जिस पर टिप्पणी (फीडबैक) भी की जाती है, हम सही-गलत के निशान का इस्तेमाल भी करते हैं और किसी भी दूसरे स्कूल की तरह लाल कलम का इस्तेमाल भी हमारे यहां होता है। हालांकि, सबसे महत्त्वपूर्ण अंतर यह है कि हम किसी भी तरह का गुणात्मक या मात्रात्मक श्रेणीकरण (रैंकिंग) इस्तेमाल नहीं करते हैं। हम शिक्षार्थियों को कोई भी ऐसी सुविधाजनक रस्सी नहीं देते, जिससे वे एक-दूसरे को तुलनात्मक रूप से आंक सकें।

हमारे शैक्षिक दर्शन के इस प्रमुख पहलू पर कई सवाल उठते हैं और इस आलेख में मैं, अपनी योग्यतानुसार उनको समझाने का प्रयास करूंगी। हालांकि, एक बहुत ही मौजूं सवाल है, जिसका जवाब देना मैं हमेशा मुश्किल पाती हूं और इसका मैं शुरू में ही उल्लेख करूंगी। पाठक हमेशा यह कह सकता है कि अरे, आपका तो एक छोटा-सा वैकल्पिक विद्यालय है और आप जो करते हैं, वह मेरी कक्षा या मेरे स्कूल में दुहराया नहीं जा सकता है। यह सच है। हालांकि, हमारे फैसले के पीछे सीखने की जो दृष्टि है, वह भी सच्ची और वास्तविक है। दरअसल, वर्षों से लोगों ने हमें कई बार कहा है कि चीजों को एक खास तरह से करने के हमारे ढंग की वजह से उनको शिक्षा के बारे में खुद की समझ स्पष्ट करने में मदद मिलती है। फिर, कौन जानता है कि यह कहां तक पहुंचे?

तुलनात्मक आकलन के खतरे

बहुत छोटी अवस्था से ही, वयस्क तुलना को व्यवहार सिखाने के औजार के तौर पर इस्तेमाल करते हैं। क्या तुम उससे जल्दी खा सकते हो, चलो देखें, कौन पहला आता है, तुम उसकी तरह क्यों नहीं हो सकते... और इस तरह के अनेक वाक्य प्रयुक्त होते ही हैं। इसमें तात्कालिक सफलता तो निश्चित तौर पर मिलती है, लेकिन अगर आप लंबे समय तक और नजदीक से देखें, तो यह रवैया आपकी सोच से कहीं अधिक नुकसान पहुंचाता है। एक ऐसे स्कूल में, जहां तुलनात्मक आकलन आमतौर पर इस्तेमाल होता है, बच्चे जल्दी ही सीखने के मामले में एक ऐसा खास दिमागी झुकाव पा लेते हैं, जिसे प्रदर्शनात्मक रुझान (परफॉरमेंस ओरिएंटेशन) कहते हैं। इस मनःस्थिति से वे किसी भी अधिगम संबंधी कार्य को यह सोचते हुए करते हैं कि उनका प्रदर्शन कैसा और दूसरों की तुलना में किस तरह का होगा? यह उस विचार के लिए कोई जगह नहीं छोड़ता कि उन्होंने वास्तव में विषय को समझ लिया है और उस पर प्रवीणता (मास्टरी) हासिल की है, जिसे हम प्रवीणता-रुझान (मास्टरी ओरिएंटेशन) कहते हैं। बदकिस्मकती से, शोध हमें यह बताते हैं कि ये दोनों ही रुझान शिक्षार्थियों के दिमाग में अक्सर एक साथ नहीं रहते हैं। इनमें से एक ही उसके दिमाग में रहता है। पर, क्या यह रुझान मायने रखता है? दूसरे शब्दों में, अगर मेरा लक्ष्य शिक्षार्थियों को कुछ सिखाना है, क्या यह मायने रखता है कि वह इसे क्यों सीख रहा या रही है?

जवाब यह है कि हां, यह मायने रखता है। एक शिक्षार्थी का रवैया ही तय करता है कि सफल अधिगम के बारे में उसके विचार क्या हैं? जिस शिक्षार्थी ने प्रदर्शन-रुझान विकसित कर लिया है, उसके लिए सफलता दूसरों से बेहतर करने का नाम है और यह उस विरले शिक्षार्थी तक बहुत आसानी से आ जाएगी, जिसके पास उच्चतर क्षमताएं हैं और जिसका खुद पर भरोसा है। हालांकि, यदि वह इतना भाग्यशाली नहीं है और वह असफलता से दूर रहना चाहता है, तो उसके लिए कुछेक दूसरे रास्ते संभव हैं:

- वह चुनौतीपूर्ण कामों की अनदेखी कर सकता है। वह केवल उन कामों को लेगा, जिनके बारे में वह निश्चित हो कि उनको दूसरों से बेहतर ढंग से कर पाएगा।
- वह सुस्ती बरत सकता है, मेहनत नहीं कर सकता है और इसे जाहिर कर सकता है कि उसने काम नहीं किया। जब इसके बाद उसका प्रदर्शन अच्छा नहीं होगा, तो वह हमेशा इसकी व्याख्या, 'मैंने तो खैर मेहनत ही नहीं की', के तौर पर कर सकता है। यह मजेदार परिघटना 'आत्म-अक्षमता' कहलाती है और आश्चर्यजनक तौर पर यह मेधावी शिक्षार्थियों में बहुत ही आम है, जो खुद को असफल नहीं दिखाना चाहते।
- वह नकल करने या ताक-झांक करने की भी कोशिश कर सकता या सकती है।

ये तीनों ही परिणाम स्पष्ट तौर पर अवांछनीय हैं। हालांकि, बुनियादी स्तर पर, जैसा कि हम सभी जानते हैं, परीक्षाएं तो शिक्षार्थियों में बेचैनी ही पैदा करती हैं। व्यग्रता न केवल सीखने की प्रक्रिया के लिए अनावश्यक है, बल्कि यह दिमाग के उन हिस्सों को भी सचमुच नुकसान पहुंचा सकती है, जिनका याददाश्त और सीखने से संबंध है। भारत में अधिकतर स्कूली व्यवस्था में प्रदर्शनात्मक परीक्षा स्कूलों का वार्षिक कार्यक्रम है। मनोवैज्ञानिक शोधों ने साफ तौर पर दिखाया है कि दीर्घकालिक तनाव का स्थायी प्रभाव नई चीजों के सीखने की हमारी क्षमता पर पड़ता है।

सीएफएल (सेंटर फॉर लर्निंग) में हमने अपने शैक्षिक उद्देश्यों पर विचार किया और महसूस किया कि हम अपने शिक्षार्थियों से सीखने से प्यार करने और इसका आनंद उठाने की अपेक्षा रखते हैं, क्योंकि यह आंतरिक तौर पर आनंददायी है। हम प्रदर्शन और नतीजों पर ही केंद्रित बच्चे नहीं चाहते थे, और हम तयशुदा तौर पर उनके जीवन में बेचैनी को प्रमुख भाव नहीं बनने देना चाहते थे। इसीलिए, हमने एक सोचे-समझे फैसले के तहत, यह तय किया कि हम उनको तुलनात्मक आकलन का विषय नहीं बनाएंगे। इसके साथ ही तत्काल कई सारी चुनौतियां उठ खड़ी

हुईं। आखिर, हम फीडबैक के मकसद के लिए शिक्षार्थियों की समझ का आकलन कैसे करेंगे? हम किसी शिक्षार्थी की किसी विषय पर पकड़ या उसकी निपुणता के स्तर को अभिभावकों या दूसरे शिक्षकों को कैसे बताएंगे? हम शिक्षार्थियों को और अधिक मेहनत करने के लिए प्रेरित कैसे करेंगे, भले ही उनको अधिक नंबर लाने या कम नंबर लाने से बचने को ना कहें?

अर्थपूर्ण फीडबैक के लिए मौके तलाशना

हमारा सबसे बड़ा लाभ, जाहिर तौर पर कक्षा का छोटा आकार है। एक कक्षा में लगभग छह से दस शिक्षार्थियों के होने से, यह एक आसान-सी बात है कि हर एक शिक्षार्थी की समझ या प्रवीणता के स्तर से नजदीकी तौर पर वाकिफ रहा जाए। दरअसल, हम तो हरेक शिक्षार्थी के नोटबुक को शाब्दिक तौर पर देख सकते हैं। शिक्षार्थी की समझ की धारणाओं पर हम तुरंत ही प्रतिक्रिया देते हैं और यह एक लगातार चलने वाली प्रक्रिया है। यदि मैं अपनी कक्षा में एक पल में सवाल पूछूं और कोई एक शिक्षार्थी कुछ गलती करता या करती है, तो मैं उसी वक्त उस गलती को पकड़ने की कोशिश करती हूं और सुलझा देती हूं। हमें यह आशंका हो सकती है कि इस तरह की कक्षा में फीडबैक उन शिक्षार्थियों के 'समय की बर्बादी' है, जो पहले ही 'समझ' चुके हैं।

हालांकि, मैंने पाया है कि समझ हमारी उम्मीद से अधिक समय लेकर गहराती और मजबूत होती है। शिक्षक के तौर पर इतने साल गुजारने के बाद भी मैं महसूस करती हूं कि हरेक बार मैं उन अवधारणाओं को बेहतर या अलग तरीके से समझ पाती हूं, जब-जब मैं उन्हें पढ़ाती हूं। इसीलिए, कक्षा के वे छात्र भी, जो सब कुछ समझ गए जैसे लगते हैं वे भी इस चर्चा से फायदा पाते हैं। खासकर, यदि शिक्षक इसे विभिन्न तरीकों से समझाने का प्रयास करता है। यह तब भी होता है, जब किसी गृहकार्य में गलतियां दिखती हैंः शिक्षक इसे दूसरी कक्षा में साफ कर सकता है या फिर नोटबुक में विस्तार से अपनी राय दे सकता है या फिर कक्षा के बाहर कुछ देर छात्र के साथ बैठने का समय निकाल सकता है।

हालांकि, किसी सत्र या वर्ष के अंत में यह जरूरी हो जाता है कि हम ठहरकर एक समेकित आकलन करें। इसमें चुनौती यह आती है कि उन असंख्य अशाब्दिक छवियों और भावों को संगठित कैसे करें, जो हरेक शिक्षार्थी के बारे में हमारे व्यापक आकलन को निर्मित करते हैं। साथ ही, स्पष्ट और आसान वाक्यों में अपनी 'सहज अनुभूति' को कैसे अभिव्यक्त करें, ताकि शिक्षार्थी को हमारे फीडबैक से लाभ मिल सके।

फिलहाल, हम एक उपकरण 'आकलन-शीर्ष' (रुबरिक) का इस्तेमाल कर रहे हैं, यानी असेसमेंट रूबरिक। यह दरअसल एक तरह का प्रारूप (मैट्रिक्स) है, जिसकी कतारें तयशुदा कुशलता या ज्ञान के क्षेत्रों को दर्शाती हैं और जिसके स्तंभ (कॉलम) विशेष निपुणता के उनके स्तर को दिखाते हैं। हमने शुरुआत एक खास आयुवर्ग के शिक्षार्थियों की किसी विषय में कुशलता या समझ को सूचीबद्ध करने से की। इसके बाद हरेक कौशल के लिए हमने कुछ स्तर (शायद तीन से पांच) रखे। अच्छा आकलन-शीर्ष वह होता है, जिसमें सूचनाएं अधिक हों। उदाहरण के लिए, बुरा, औसत, बढ़िया, बेहतरीन आदि हो सकता है, इसके बाद 1 से 100 के बीच का कोई अंक और फिर 'ए' और 'एफ' के बीच का कोई अक्षर हो सकता है। यहां एक लिखित आकलन शीर्ष का उदाहरण चित्र में दिया गया है।

मनोविज्ञान के लिए आकलन-शीर्ष (रूबरिक)

1.	जटिल पाठ को पढ़ना और समझना	हमेशा	अक्सर	कुछेक बार	शायद ही कभी
2.	जरूरी सूचना को रखते हुए पाठ का संक्षेपण	हमेशा	अक्सर	कुछेक बार	शायद ही कभी
3.	छोटे, साफ और व्याकरणिक वाक्य लिखना	हमेशा	अक्सर	कुछेक बार	शायद ही कभी
4.	सही वर्तनी	हमेशा	अक्सर	कुछेक बार	शायद ही कभी
5.	कक्षा में सुनते या बातचीत के दौरान साफ–सुथरे नोट्स लेना	हमेशा	अक्सर	कुछेक बार	शायद ही कभी
6.	कक्षा में चुनौतीपूर्ण बहस का हिस्सा बनना	हमेशा	अक्सर	कुछेक बार	शायद ही कभी
7.	गृहकार्य का हिस्सा समय पर पूरा	हमेशा	अक्सर	कुछेक बार	शायद ही कभी
8.	साल के अंत में पूर्व में पढ़ाए हिस्सों को याद करना	हमेशा	अक्सर	कुछेक बार	शायद ही कभी
9.	आसानी से शब्दावली का इस्तेमाल	हमेशा	अक्सर	कुछेक बार	शायद ही कभी
10.	लेखों में काम की पर्याप्त बातें	हमेशा	अक्सर	कुछेक बार	शायद ही कभी

एक शिक्षक अपना खुद का आकलन शीर्ष बना सकता है और यह कसरत उसे खुद ही अपने शिक्षार्थियों के लिए शैक्षिक लक्ष्य साफ करने में मदद करेगी। इस बीच, शिक्षार्थी भी अपनी ताकत और कमजोरियों का इस प्रारूप से पता लगा सकता या सकती है। इसके अलावा भी इसका एक अतिरिक्त रचनात्मक इस्तेमाल हैः शिक्षार्थी इसे स्व-आकलन के तौर पर भर सकते हैं, जो जोड़ों में किया (पीयर असेसमेंट) जा सकता है। खासकर, यदि वह लेखन के एकल टुकड़े के तौर पर हो।

अपने स्कूल में, वर्ष में एक बार, हम हरेक शिक्षार्थी के लिए विस्तृत वर्णनात्मक रपट भी लिखते हैं। शिक्षार्थी के साथ काम करने वाले लगभग सभी शिक्षक उनकी धारणाओं के आधार पर एक छोटा-सा आलेख लिखते हैं। यह आलेख दरअसल, उसके बढ़ने के कई आयामों के बारे में होता हैः जैसे, भावनात्मक, शारीरिक, सामाजिक और अकादमिक। इसमें से कुछ का निचोड़ आगे दे रहे हैं। गोपनीयता के लिए कुछ नामों को हटा दिया गया हैः

''...गणित की कक्षा में बहुत सावधान और ध्यानस्थ रहती है, हमेशा ही रही है। वह नई चीजों को सीखने में मजा लेती है और गणित के सवाल हल करके खुश होती है। हालांकि, मैं सोचती हूं कि वह खुद को बहुत अधिक संलग्न नहीं करती, बल्कि केवल अच्छे काम को बनाए रखती है। जाहिर तौर पर, वह मेहनती है, लेकिन उसे गणित अच्छा भी लगता है। वह पिछले अध्यायों को याद रखती है और बहुत नियमित है, अपना काम सफाई से करती है। मैं चाहूंगी कि वह अपने गणित के काम को लगातार दुहराती रहे और छुट्टी में गृहकार्य से थोड़ा अधिक वास्ता रखे और उसे बिल्कुल शुरुआत में ही खत्म करने या फिर छुट्टियों के अंतिम सप्ताह तक के लिए बचाकर रखने वाली मानसिकता में नहीं फंसे।''

''...की कक्षा में सहभागिता सवालों, टिप्पणियों, समझ और कुल मिलाकर दुनिया से जोड़ने के लिहाज से बहुत अच्छा है। कई बार वह कक्षा में बहुत अधिक थका या उनींदा हो सकता है, लेकिन पूरी तरह से शिरकत करने की कोशिश करता है। लिखित कार्य में थोड़ी-सी मेहनत लगती है। मैं सोचती हूं कि यह अब बेहतर हो रहा है। मुख्य मसला तो यह है कि वह बहुत संक्षिप्त है, उसे और विवरणात्मक होने की जरूरत है। उसे 'किसी तरह निपटा देने' की मनोवृत्ति छोड़नी होगी (शायद यह लिखित कार्य के साथ की पुरानी आदत हो)। मुझे उम्मीद है कि बड़े होने के साथ ही वह लिखित तौर पर भी खुद को अभिव्यक्त करने में उतना ही आनंद पाएगा, क्योंकि उसके पास कई महत्त्वपूर्ण बातें साझा करने को हैं और वे सीमित हो जाती हैं, अगर कोई केवल आमने-सामने की बातचीत में ही अभिव्यक्ति को

पसंद करे। मौखिक अभिव्यक्ति सचमुच सुधरी है (कम टूटे हुए वाक्य, समृद्ध शब्द-भंडार, कम असावधानी और गालियां आदि) पर उसे इस पर और अधिक काम करना होगा, क्योंकि अंग्रेजी अभिव्यवक्ति की प्राथमिक भाषा है...''

''...गणित की कक्षाओं में बहुत व्यवस्थित और मेधावी है। वह काम में नियमित है और उसे समग्रता से करता है। वह चरणों को अच्छे तरीके से व्याख्यायित करता है, जिससे उसके सहपाठियों को मदद मिलती है। उसे पहेलियां भी पसंद हैं और मैंने देखा है कि अनसुलझी पहेलियां काफी देर तक उसके दिमाग में रहती हैं, जब तक वे सुलझ न जाएं। जहां तक भद्दी टिप्पणियों की बात है, तो उसमें काफी कमी आई है, जो मैं पहले उससे काफी सुनती थी। वह अब कक्षा और उसके बाहर भी परिपक्व नजर आता है। मैं उम्मीद करती हूं कि मेरा अवलोकन सच्चाई को बयान करता हो...''

''...तेज है और गणित में थोड़ी हड़बड़ी भी करता है। वह बहुत तेजी से समझता है और मेरे हामी भरते ही काम शुरु कर देता है, उसमें डूब जाता है। कई बार ऐसा महसूस होता है, जैसे वह कोई ट्रेन पकड़ने के लिए भाग रहा है, हालांकि यहां प्रथम आने के लिए कोई पुरस्कार भी नहीं है। चूंकि, वह अपने गृहकार्य के बारे में पूरी तरह से जिम्मेदार है, मैं अपनी ऊर्जा इस पर लगा सकती हूं कि उसने विषय को समझ लिया है। हालांकि सफाई एक मसला है और वह भी जल्दी की वजह से हो सकता है। कक्षा में वह काफी बोलता है और जैसे एक 'तरंग' में रहता है- उसे शांत कराने के लिए कई बार चेताना पड़ता है ताकि वह अपनी इधर-उधर बातचीत बंद करे। हालांकि, वह इन चेतावनियों को मैत्रीभाव से ही लेता है, मैं चाहती हूं कि वह खुद से ही कक्षा में रहने के उचित तौर-तरीके सीख ले। वह हमेशा से ही बातचीत के लिए एक शानदार बच्चा रहा है, वह बेहद तेजी से अपने तरीकों को स्वीकारता है, जब वे उसे बताए जाते हैं। मुझे उम्मीद है कि अगले चरण में वह इनमें बदलाव लाकर अपना व्यवहार बदल दे...''

आंकड़े एकत्रित करना, जिन पर एक रपट आधारित हो

इस तरह की वर्णनात्मक रपट और शीर्ष (रूबरिक) को तभी भरा जा सकता है, जब शिक्षक बच्चों के सीखने की प्रक्रिया से नजदीकी तौर पर जुड़ा हो। हां, मानती हूं कि यह तब अधिक कठिन होता है, जब किसी कक्षा में कई शिक्षार्थी हों। इसके बावजूद, मुझे लगता है कि इस तरह की जागरूकता शिक्षण का एक आधारभूत आयाम है और यदि हम इसी को कुर्बान कर दें, तो हम शायद शिक्षक के तौर पर अपने कार्य को ही नुकसान पहुंचाएंगे। इसी वजह से, अगर कक्षा में अधिक शिक्षार्थी हैं, तो आपको उनके आकलन के रचनात्मक तरीके ढूंढ़ने पड़ेंगे। बढ़िया ढंग के कल्पनाशील अभ्यासपत्रक (वर्कशीट), ऐसे सबक जिनमें पर्याप्त समय और खुली किताब की छूट हो (जैसे, गृहकार्य), व्यक्तिगत या सामूहिक परियोजना (प्रोजेक्ट), जहां काम की गुणवत्ता शिक्षार्थी के प्रयास और उपलब्धि को दिखाए- ये सभी रोमांचित करने वाली संभावनाएं उपर्युक्त संदर्भ में मौजूद हैं। यदि आप परंपरागत परीक्षा या इम्तहान को देखें, तो वे इसके ठीक उलट हैं। बुरे डिजाइन वाले, समझ के ऊपर स्मृति को तरजीह देने वाले, किताब के बिना, समय के कड़े प्रतिबंध वाली परीक्षाएं... बड़ी व्यवस्था की बाध्यताओं की वजह से बाहरी बोर्डों द्वारा आयोजित परीक्षाओं में ये सारी चीजें होनी आवश्यक हैं (सिवा, बुरे डिजाइन के), लेकिन स्कूल के शिक्षकों द्वारा ली जाने वाली कक्षा-परीक्षा तो कम से कम इन सीमाओं से मुक्त हो ही सकती है।

अपने शिक्षार्थी को और भी बेहतर तरीके से जानने का एक और दूसरा आसान तरीका उसे कक्षा में बहस और बातचीत के लिए इजाजत देने का है, भले ही वह थोड़े समय के लिए हो। यह बहस उस पढ़ाई का एक विस्तार हो सकती है, जो पिछले सप्ताह कक्षा में पढ़ाया गया हो। (इसका मतलब किसी मौखिक परीक्षा से नहीं लगाएं, अगर यह ऐसा कुछ हो जाता है तो शिक्षार्थियों के तनाव का सबब बन जाएगा। इसे मुख्य मुद्दे के इर्दगिर्द रखें, लेकिन खुले अंत (ओपन एंडेड) भी हों, और हरेक शिक्षार्थी को एक उपयुक्त प्रतिक्रिया देने की इजाजत दें, भले ही हरेक को अभिव्यक्ति का मौका न मिल पाए। पूरे साल भर की अवधि में उन बच्चों को प्रोत्साहित कीजिए जो चुप्पे हैं, किसी-किसी पर कुछ विशेष सवाल दागिए। जल्द ही, आपको यह पता चल जाएगा कि कौनसा बच्चा कहां है और

यह एक समृद्ध वर्णनात्मक रपट बनाने में आपकी मदद करेगा। बात दरअसल यह है कि आपके शिक्षार्थियों में सही सवाल देने के अलावा भी कई योग्यताएं और आयाम हैं और आपको एक शिक्षक के तौर पर उनको बस ढूंढ़ने के तरीके निकालने हैं। ऊपर दी गई टिप्पणियों में आप उदाहरण देख सकते हैः विषय में आनंद, क्षमता की खुद से पहचान, मौखिक अभिव्यक्ति, दूसरों को समझाने की क्षमता, कठिन सवालों पर जूझते रहना, स्वच्छता, कक्षा में व्यवहार... आदि। इन सब के आधार पर बनाई टिप्पणी शिक्षार्थी का व्यापक चित्र पेश करती है।

जैसा कि आप देख सकते हैं, हमारे रूबरिक या वर्णनात्मक रपट में तुलनात्मक गणना की जरूरत नहीं होती है, हालांकि जब भी आप कुछ का आकलन करते हैं, तो एक 'मानक' हमेशा दिमाग में होता है। यही अंतर तथाकथित 'प्रतिमान-संदर्भित (नॉर्म रेफरेंस्ड)' और 'मानक-संदर्भित (क्राइटेरिया रेफरेंस्ड)' परीक्षाओं में होता है। क्या हम शिक्षार्थियों के आकलन का कोई ऐसा मानक विकसित कर सकते हैं, जिसके तहत हमें यह न कहना पड़े, 'वह गणित में अपनी कक्षा के 54 फीसदी शिक्षार्थियों से बेहतर है...', क्योंकि यह बहुत उपयोगी बयान तो नहीं है। निश्चित तौर पर हम ऐसा कर सकते हैं। दुनिया में कई निकायों ने अलग आयुवर्ग के लिए अलग विषयों में राष्ट्रीय मानक प्रकाशित किए हैं। इन कागजातों में काफी चिंतन और सावधानी बरती गई है और इनमें से कई वेब पर मुफ्त में उपलब्ध हैं। इंटरनेट की बढ़ती पहुंच के साथ ही एक शिक्षक अब इनमें से कुछ कागजातों को पढ़ सकता है, शोध कर सकता है। दरअसल, एक अनुभवी शिक्षक इस बात को समझ सकता है कि एक निश्चित पृष्ठभूमि के निश्चित आयुवर्ग वाले शिक्षार्थी से क्या पूरा करने की अपेक्षा की जा सकती है? इसके साथ ही, वह खास शिक्षार्थी भी होता या होती है, जिसे आप इन वर्षों में जानते हैं। वह कितनी मेहनत करता है, उसकी असल क्षमताएं क्या हैं, जब वह पूरी मेहनत करता है और कोई भी दिया हुआ काम वह जल्दबाजी में और अनमने ढंग से करता है या सावधानी से और सजाकर। ये सारे निरीक्षण भी आकलन का महत्त्वपूर्ण हिस्सा हैं।

फीडबैक के तौर पर व्यक्तिगत संप्रेषण

रूबरिक और लिखित रपटों के अलावा, सीएफएल में हम शिक्षकों और अभिभावकों के साथ बैठक में काफी समय देते हैं, ताकि उन्हें मूल्यांकनपरक राय दे सकें। यह अनौपचारिक (वर्ग के बाहर) तौर पर तो होता ही है, साथ ही साल में एक बार अभिभावकों के साथ औपचारिक बैठक होती है। इस बैठक में, वे सभी शिक्षक जिन्होंने उस वर्ष शिक्षार्थियों से आदान-प्रदान किया हो, अभिभावकों के साथ बैठते हैं और हम शिक्षार्थियों की अकादमिक व गैर-अकादमिक दोनों ही तरह के अधिगम पर केंद्रित चर्चा करते हैं। इस बातचीत के फायदे बेइंतहा हैं, क्योंकि शिक्षार्थियों की एक संयुक्त तस्वीर नुमायां होती है और सुझाव एवं निर्णय मिलकर लिए जा सकते हैं। सीनियर स्कूल में तो शिक्षार्थी भी ऐसी बैठक का हिस्सा हो सकते हैं (उसकी असुविधा के बावजूद- कल्पना करें कि वह अपने अभिभावकों और शिक्षकों से घिरा या घिरी है, जो केवल उसी की और उसी पर चर्चा कर रहे हैं)। यह ध्यान रखना महत्त्वपूर्ण है कि ऐसी बैठकों का लहजा मित्रवत हो, रचनात्मक और खुला हो, न कि फैसलों और निरीक्षणों का एकतरफा संचार, जिसमें सवालों के लिए कोई जगह ही नहीं हो। ऐसी बैठकों में एक बच्चे को बड़ा करने में अभिभावकों और शिक्षकों के बीच की साझेदारी मजबूत और स्थायी होती है।

प्रेरणा का सवाल

जब स्कूल की व्यवस्था परीक्षा और इम्तहानों को एक प्रेरणा के तौर पर इस्तेमाल करना बंद कर देती है, कुछ शिक्षार्थी अनिवार्य तौर पर काम करने या सीखने में रुचि लेना बंद कर देते हैं। लेकिन वह इस हद तक ही था कि प्रेरणा का उनका स्रोत केवल दूसरों से बेहतर करना था, प्रतियोगितात्मक संदर्भ को हटा देना उनकी बढ़त को भी घटा देता है। इसका उपाय फिर से परीक्षाएं लेने लगना नहीं है। सीएफएल में हमने शिक्षार्थियों को सीखने और काम करने के लिए उनकी अपनी प्रेरणाओं को समझने को आमंत्रित करना उचित समझा है। जीवन की कुछ बेहद महत्त्वपूर्ण बातों को उनके ही लिए करना पड़ता है, जिसके पीछे एक मजबूत अंतःप्रेरणा मौजूद होती है। तुलना और प्रतियोगिता की बैसाखी के स्कूल में इस्तेमाल से, हम अपने शिक्षार्थियों से इस अंतःप्रेरणा को छीन लेते हैं। तो, अगर परीक्षाएं हट गईं, तो क्या बचा?

सीएफएल में शिक्षार्थी बहुतेरा काम करते हैं, जिसे शिक्षक देखते हैं और अपनी राय देते हैं। जब जरूरत होती है, हम शिक्षार्थियों के प्रयास और उनके काम की गुणवत्ता की तारीफ करते हैं। जिन क्षेत्रों में हम सुधार की जरूरत देखते हैं, उसे भी बताते हैं। हम सीखने और कार्य के साथ उच्चस्तरीय संबद्धता की मांग करते हैं। अगर कोई शिक्षार्थी जल्दबाज, असावधान या लापरवाह है, तो शिक्षक इसको साफ-साफ बताते हैं। यह सभी कुछ वह करने में मदद करता है, जिसे हम शानदार काम कहते हैं। आखिरकार, जीवन में सबसे शानदार प्रेरणाओं में एक तो वह संतुष्टि है, जो किसी काम को अच्छी तरह कर पाने पर मिलता है।

सामान्यतः आकलन का एक मजबूत सिद्धांत यह है कि हम वास्तविक तौर पर क्षमता को मापना चाहते हैं, ना कि प्रदर्शन को। क्षमता को बेहतर मापने के लिए विभिन्न संदर्भों में विविध कौशलों के प्रदर्शनों का प्रतिदर्श (सैंपल) बनाना है। किसी भी एकल परीक्षा को सर्वाधिक महत्त्व नहीं मिलना चाहिए। हालांकि, इसका मतलब है कि शिक्षकों को काफी कार्य करना होगा और पूरी शिक्षा व्यवस्था को ही एक तरह से काफी मेहनत करनी होगी, अगर हम देखते हैं कि कोई विकल्प नहीं है, तो शायद हम इस अतिरिक्त प्रयास के लिए अपने युवाओं को शिकायत का मौका नहीं देंगे। ◆

भाषान्तर : व्यालोक

लेखिका परिचयः शैक्षिक मनोविज्ञान में पीएचडी करने और चार साल तक स्नातक स्तर पर पढ़ाने के बाद बैंगलौर से 40 किमी पश्चिम में स्थित संस्था 'सेन्टर फोर लर्निंग' में बतौर अध्यापक कार्यरत हैं।